लिओन्टीन प्राइस

आवाज़ एक शताब्दी की



लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड

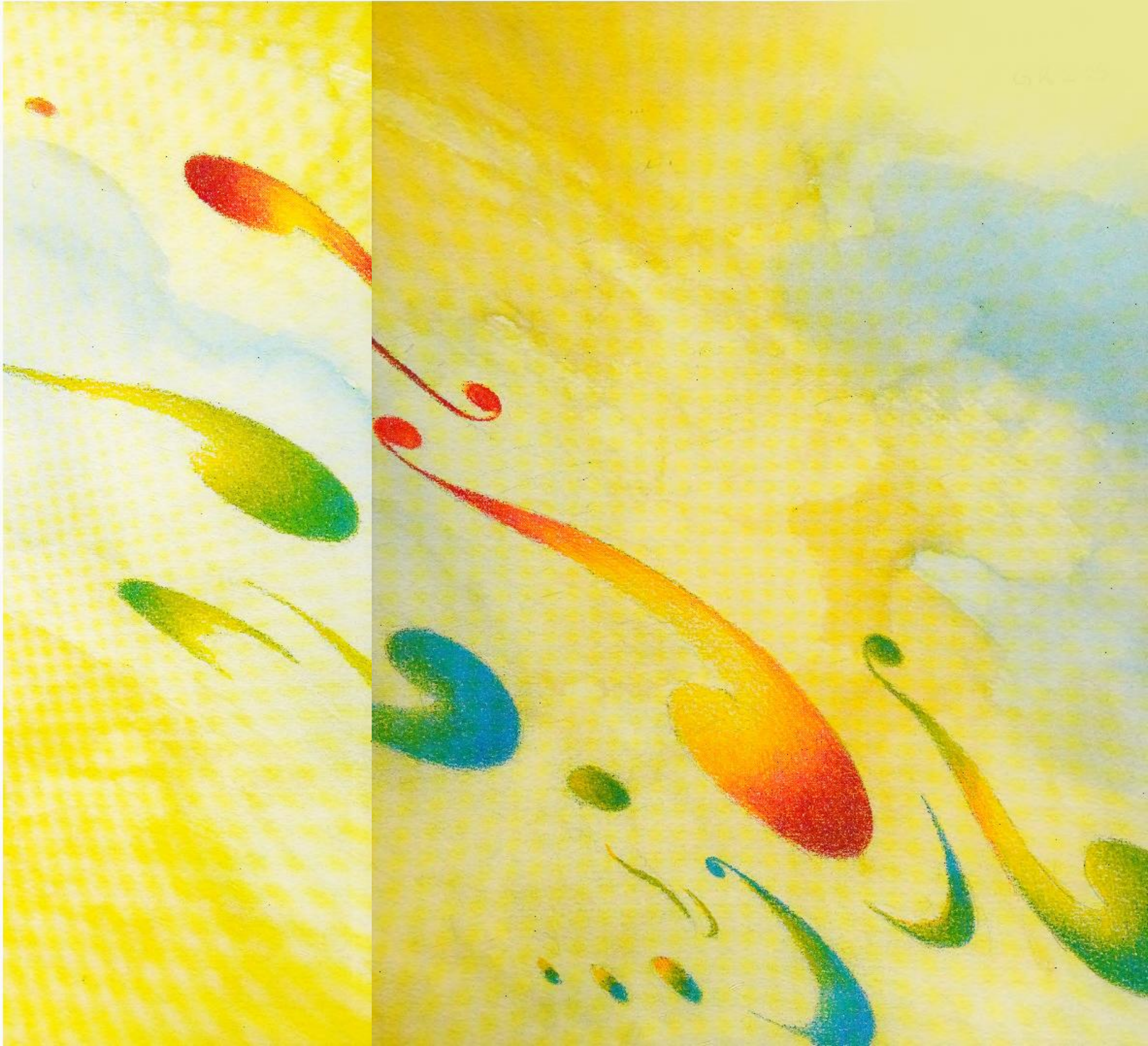
चित्रः राऊल कोलोन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मिसिसिपी के एक छोटे कस्बे में जन्मी लिओन्टीन प्राइस प्रसव कराने वाली दाई तथा आरा कारखाने के एक मज़दूर की बेटी थीं। वे बड़ी होकर हद से हद ब्लूस् (अफ्रीकी-अमरीकी विषाद गीत) गातीं। पर लिओन्टीन को सपने बड़े थे, और शुक्रगुज़ार होने के लिए भी बहुत कुछ था। उन्होंने खुद को बचपन में चर्च के स्तुति गीतों व हैलालुइया (प्रभु स्तुति) से घेरा। वे रेडियो पर ओपरा एरिआस (वाद्यों की संगत में एकल ओपरा गायन) सुनतीं और उससे भी सीखती थीं। लिओन्टीन ने महान काली गायिका मेरिअन एन्डरसन को मंच पर गाते देखा था।

हालांकि अमरीका में नस्लवाद के कारण यह असंभव ही था कि दक्षिण की एक ग़रीब काली लड़की ओपरा गायन को अपना पेशा बना सकेगी, लिओन्टीन की अद्भूत आवाज़ और अदम्य इच्छाशक्ति जीत सकी। मेरिअन ने जिस दरवाज़े का ज़रा-सा खोला था, लिओन्टीन उसे धकिया कर मंच पर आईं। उन्हें जल्द ही मैट्रोपोलिटन ओपरा तथा दुनिया भर में प्रमुख भूमिकाएं अदा करने के मौके मिलने लगे। इन भूमिकाओं में सबसे राजसी थी इथियोपिया की राजकुमारी आइडा की। लिओन्टीन को लगा मानो उसका जन्म ही इसीको गाने के लिए हुआ है।

पुरस्कृत लेखिका कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड तथा मशहूर चित्रकार राऊल कोलेन मिसिसिपी की इस बालिका की कथा को पेश करते हैं, जो बड़ी होकर मशहूर ओपरा गायिका बनीं। ऐसी गायिका जिनका गायन उनके पूर्वजों से साँस पा ऊपर उठा और जिन्होंने भावी अश्वेत गायिकाओं का पथ प्रशस्त किया।



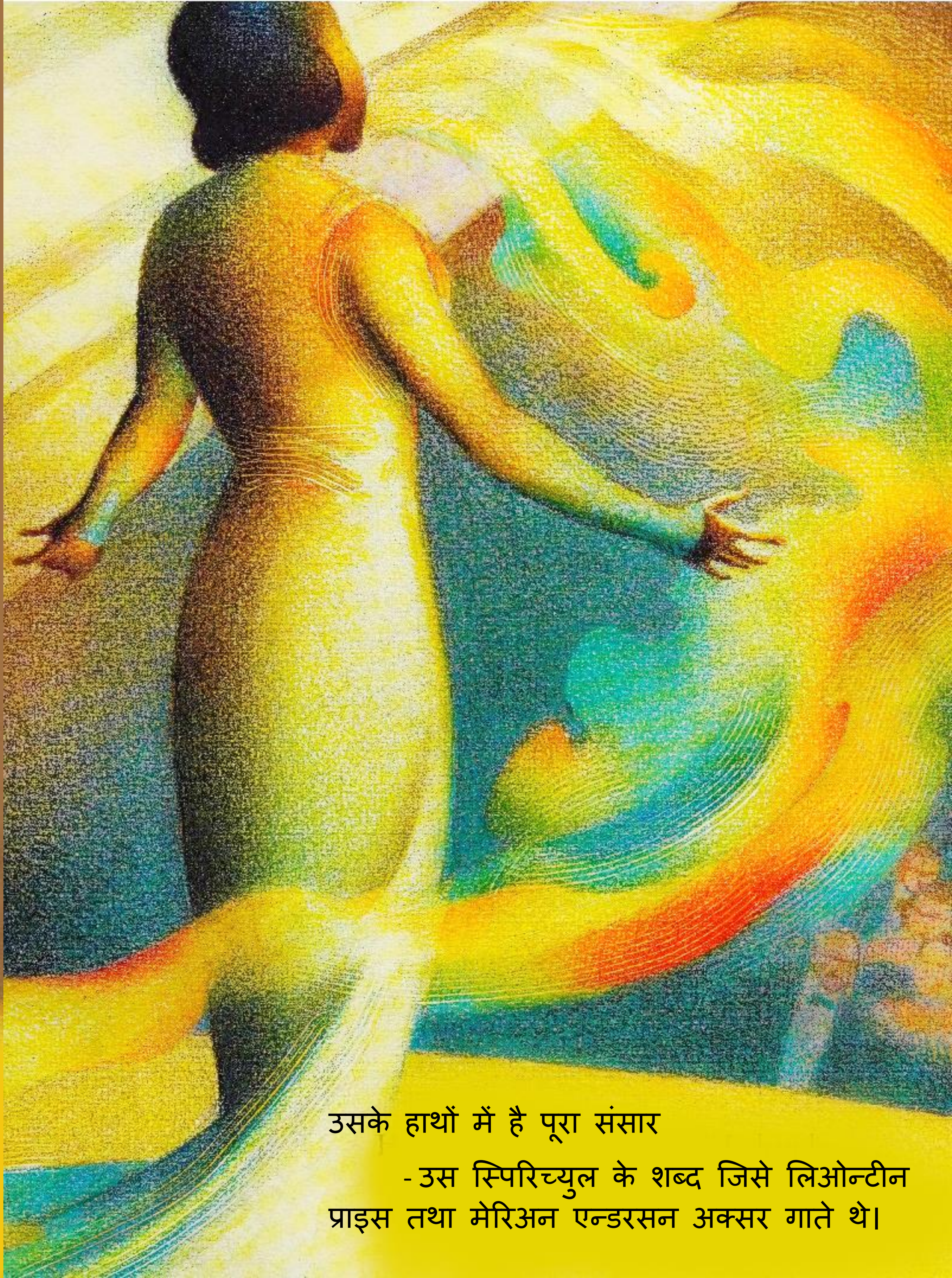
लिओन्टीन प्राइस

आवाज़ एक शताब्दी की

लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड

चित्रः राऊल कोलोन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



उसके हाथों में है पूरा संसार

- उस स्पिरिच्युल के शब्द जिसे लिओन्टीन प्राइस तथा मेरिअन एन्डरसन अक्सर गाते थे।

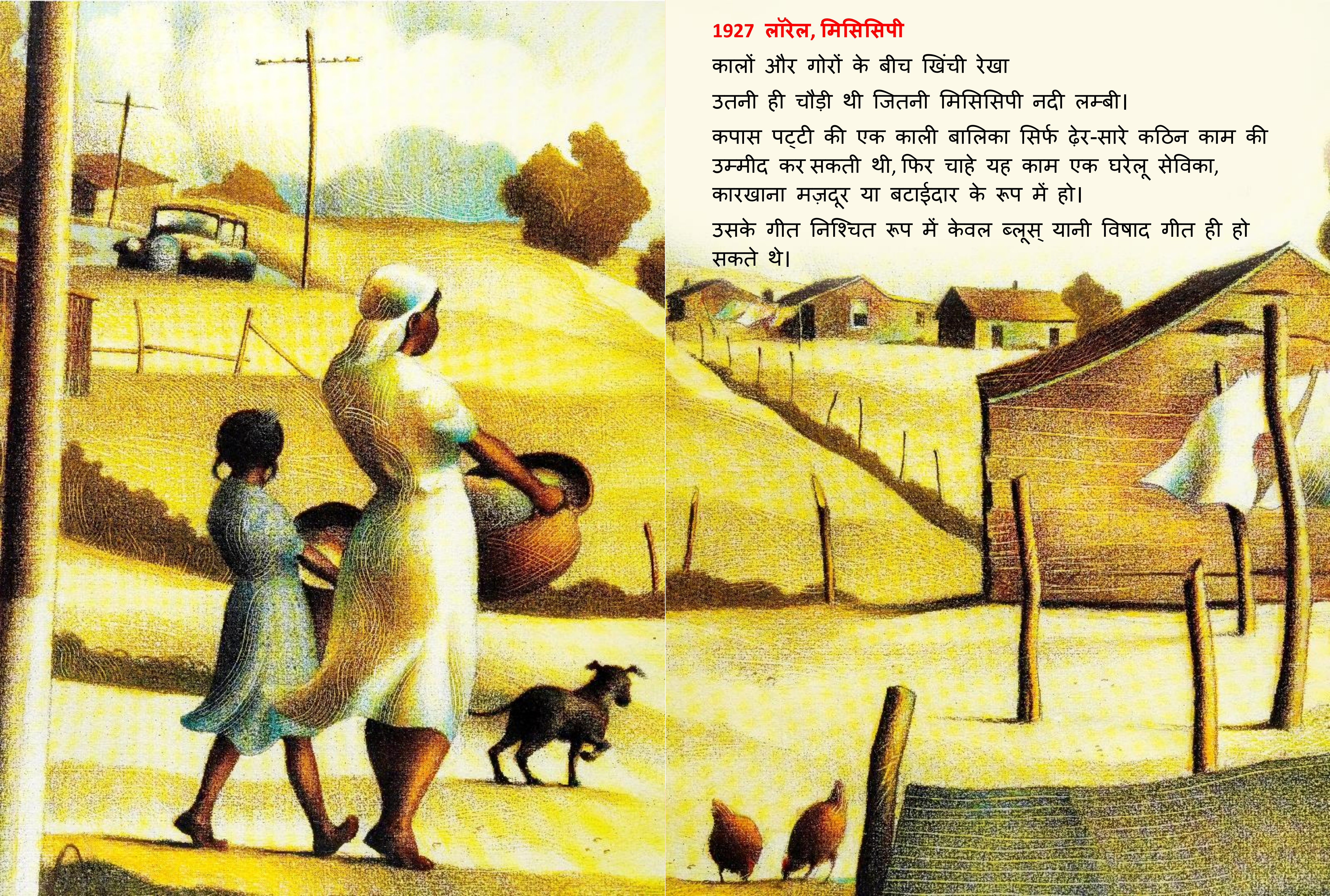
1927 लॉरेल, मिसिसिपी

कालों और गोरों के बीच खिंची रेखा

उतनी ही चौड़ी थी जितनी मिसिसिपी नदी लम्बी।

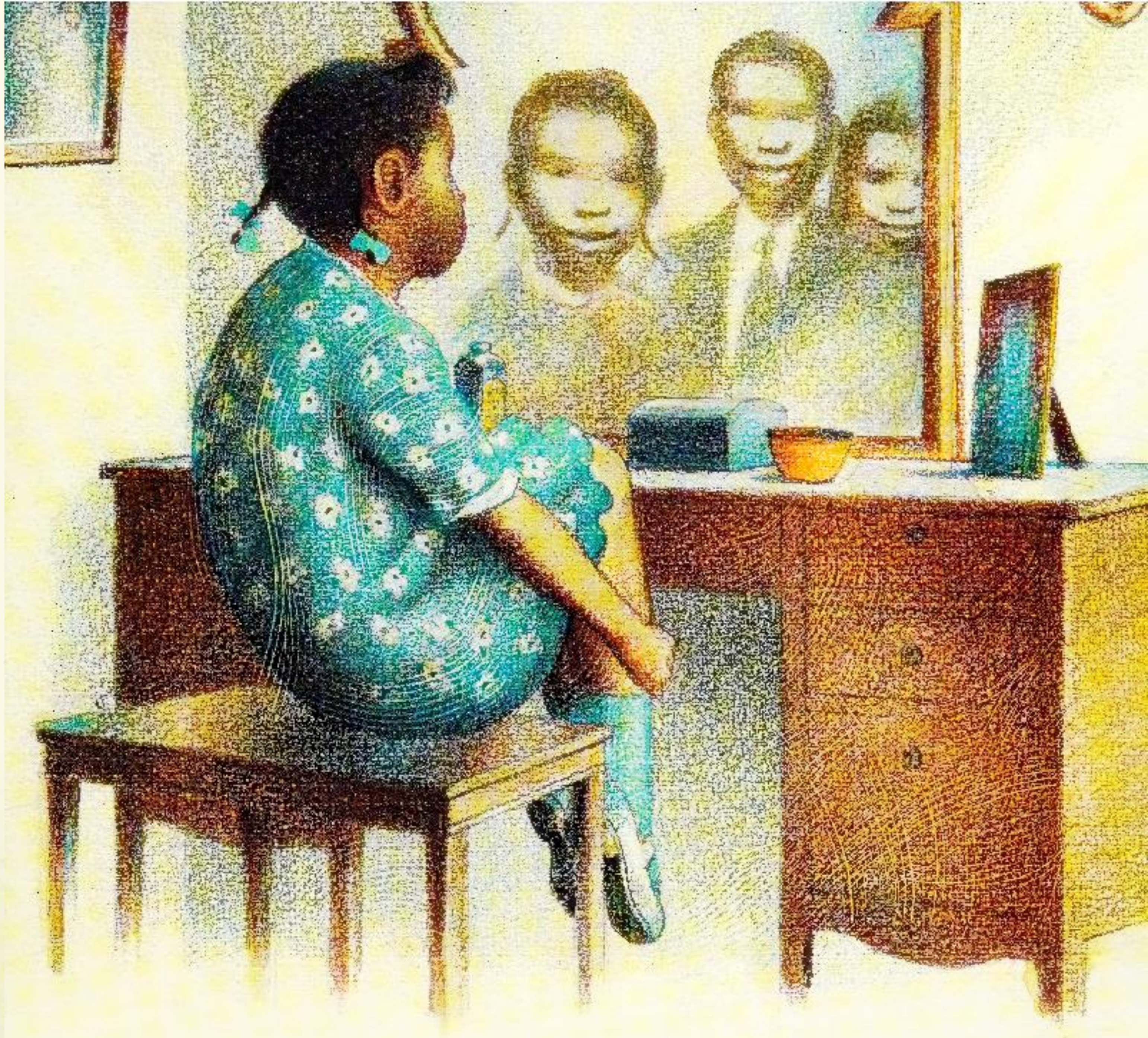
कपास पट्टी की एक काली बालिका सिर्फ ढ़ेर-सारे कठिन काम की उम्मीद कर सकती थी, फिर चाहे यह काम एक घरेलू सेविका, कारखाना मज़दूर या बटाईदार के रूप में हो।

उसके गीत निश्चित रूप में केवल ब्लूस् यानी विषाद गीत ही हो सकते थे।



हाँ, मिसिसिपी डेल्टा में दुखों का बोलबाला था,
लेकिन पहले दिन से ही, मैरी वायलेट लियोन्टीन प्राइस
ने एक अलग ही राग सुना—उसकी माँ, केटी, भजन गा रही थी;
उसके पिता, जेम्स, चर्च बैंड के लिए टुबा बजा रहे थे.





पर शुक्रगुज़ार होने के लिए लिओन्टीन के पास बहुत कुछ था।
ममा और डैडी, जो यह सुनिश्चित करते थे
कि लिओन्टीन के पास दो जोड़ी जूते हों, और जो यह जानते थे
कि उनकी नन्ही उतनी ही अच्छी थी जितना कोई दूसरा - काला या गोरा - हो सकता था।
उनके प्रोत्साहन गीत रंग की रेखा के ऊपर उठते थे।

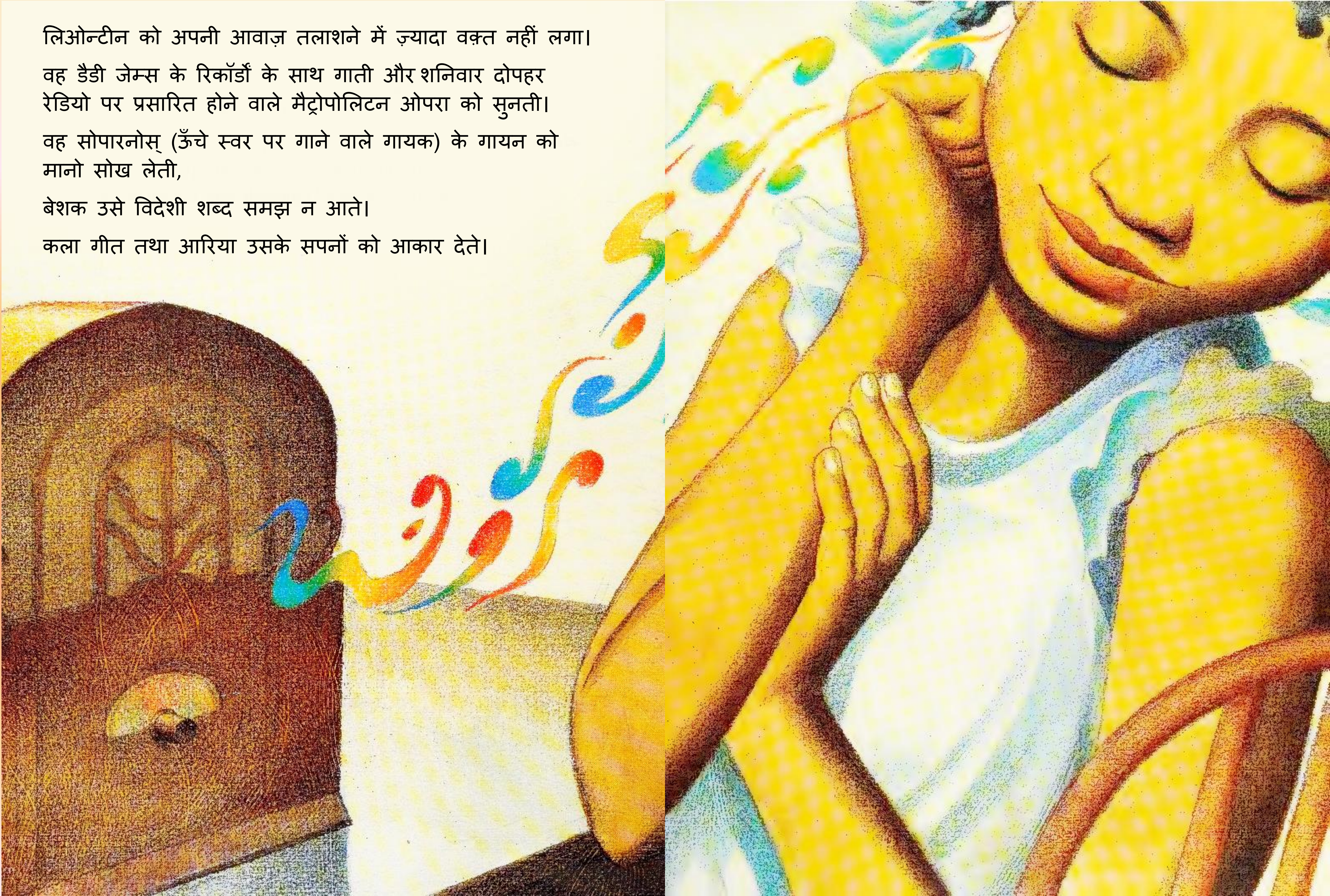
लिओन्टीन को अपनी आवाज़ तलाशने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगा।

वह डैडी जेम्स के रिकॉर्डों के साथ गाती और शनिवार दोपहर रेडियो पर प्रसारित होने वाले मैट्रोपोलिटन ओपरा को सुनती।

वह सोपारनोस् (ऊँचे स्वर पर गाने वाले गायक) के गायन को मानो सोख लेती,

बेशक उसे विदेशी शब्द समझ न आते।

कला गीत तथा आरिया उसके सपनों को आकार देते।

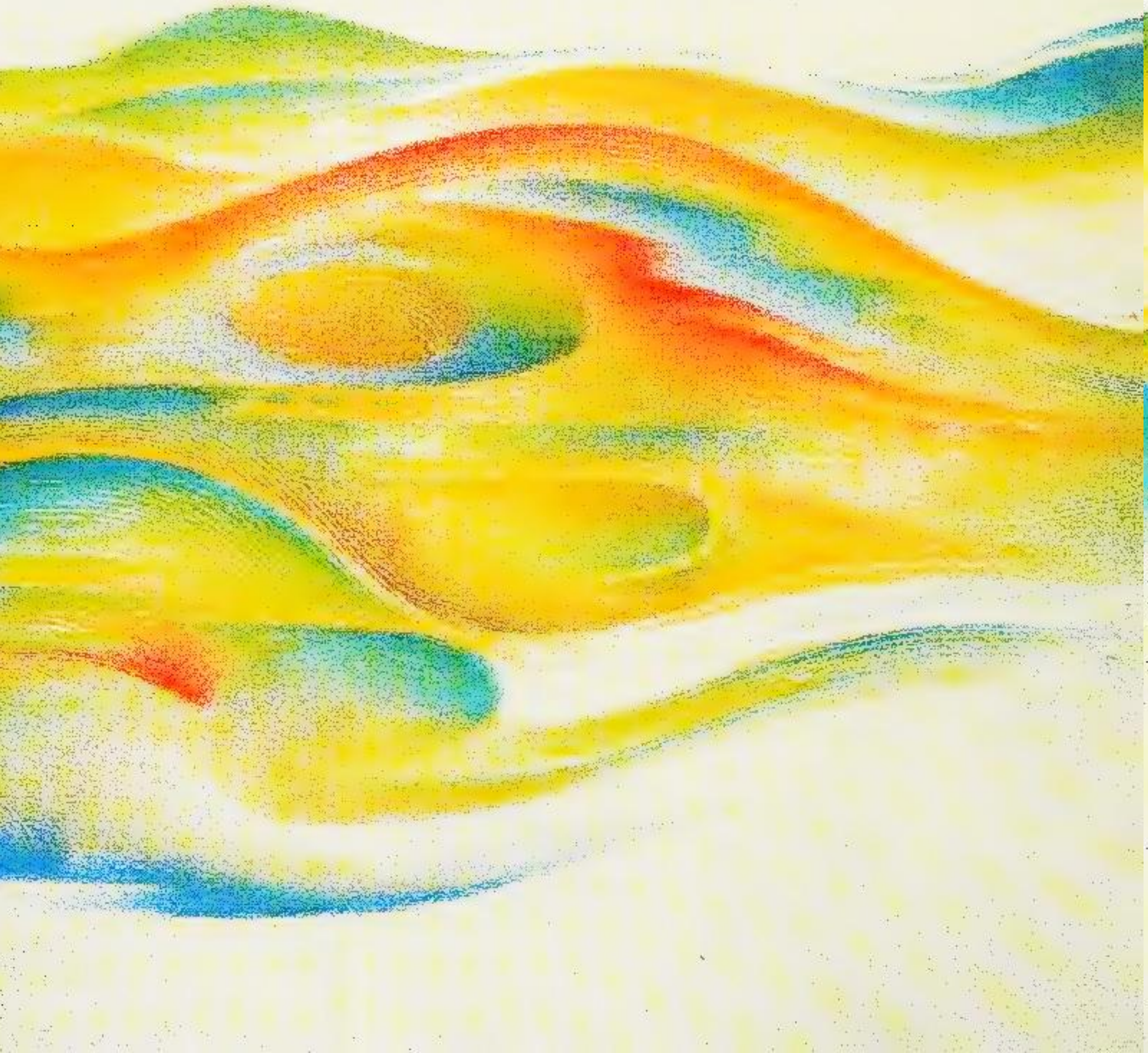


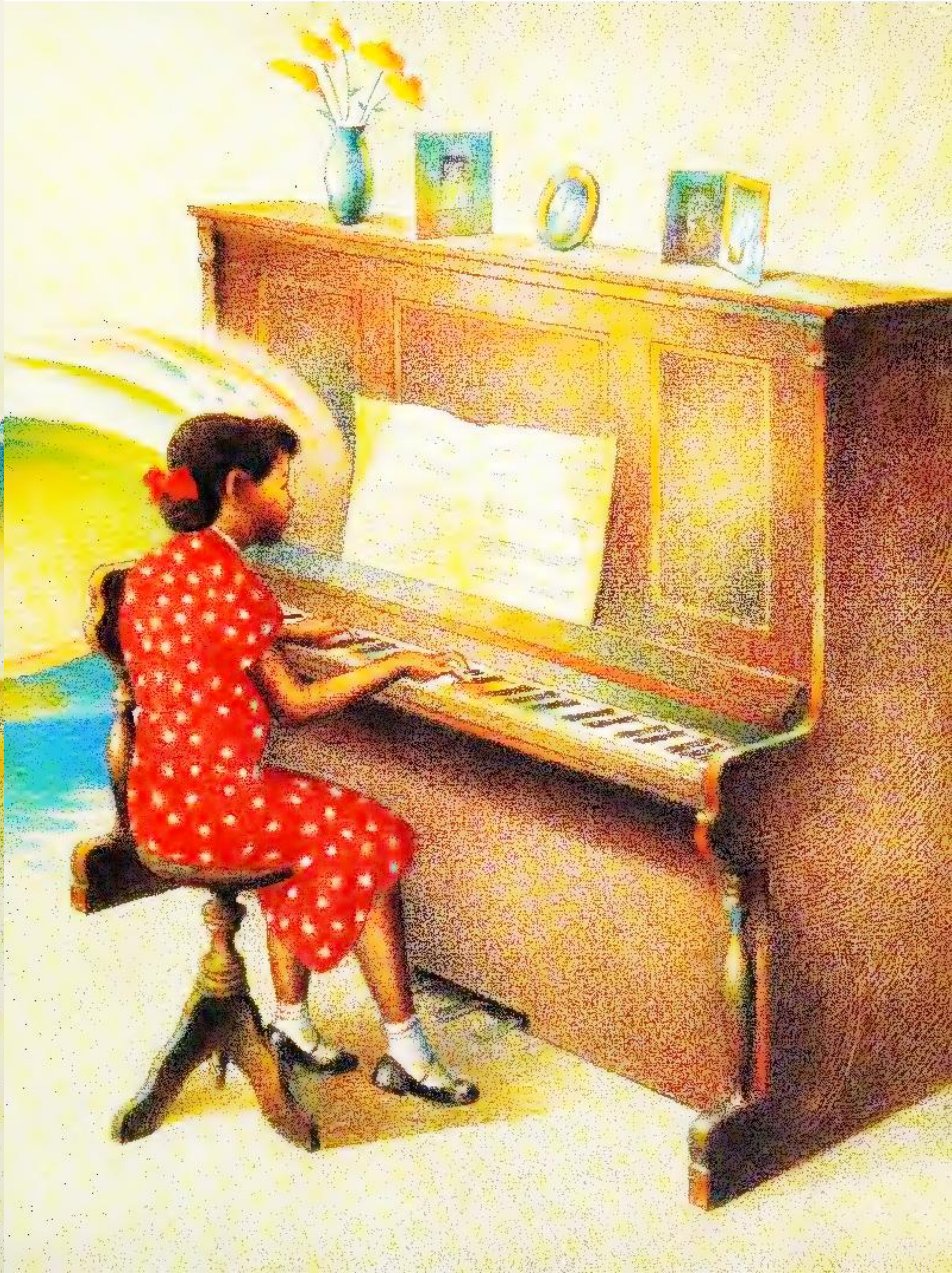
जल्द ही लिओन्टीन एक खिलौने के पियानो पर टुन-टुन करने लगी, जब तक कि उसे अपनी कला के प्रदर्शन का कीड़ा न लग गया।

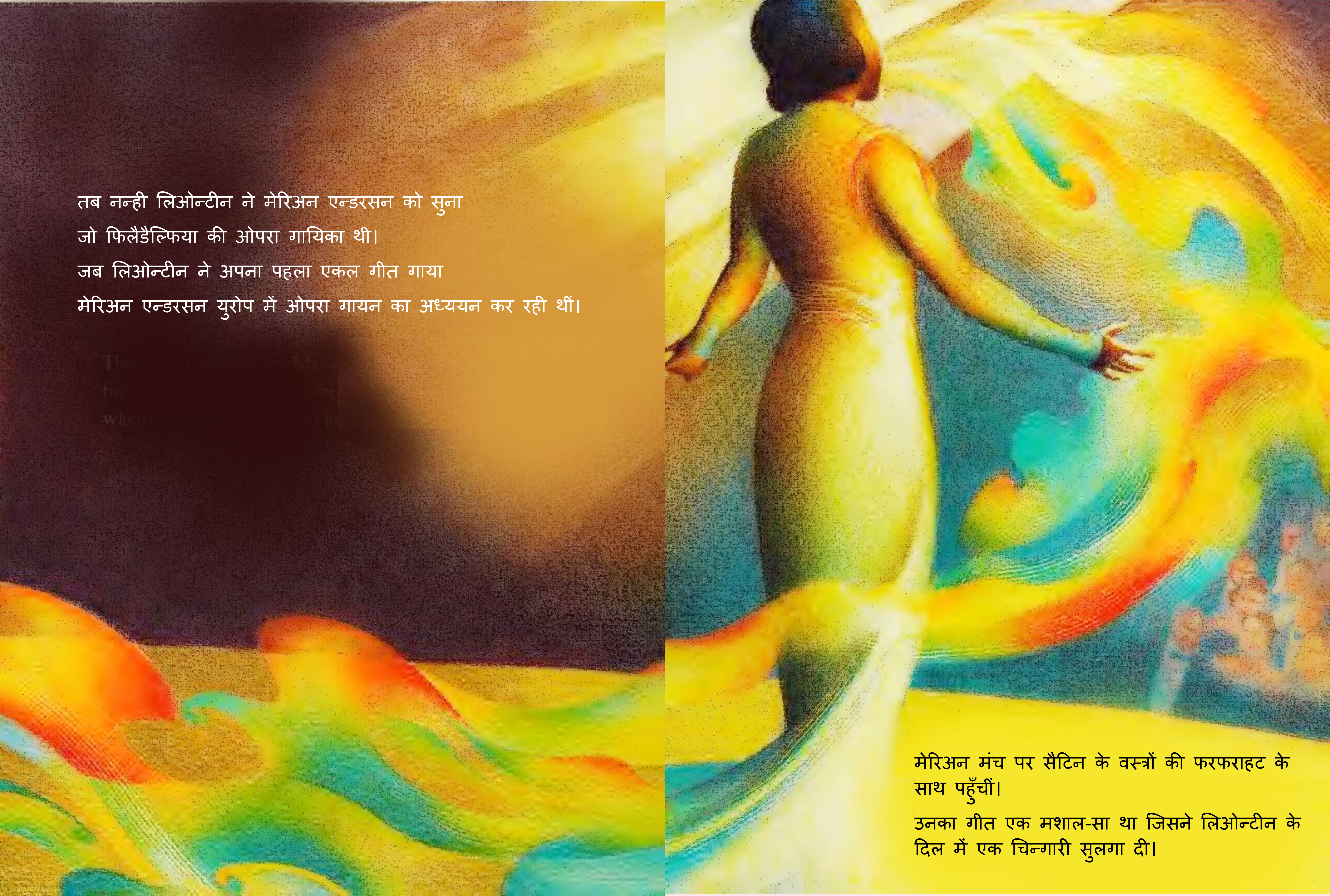
तब ममा और डैडी को एक असली पियानो खरीदना और उसे बजाना सिखाने के लिए अपना ग्रामाफोन बेचना पड़ा।

अपने पहले पियानो वादन प्रदर्शन के वक़्त उसे पैर पियानो के पैडल तक भी नहीं पहुँचते थे।

पर गीत उसकी ऊँगलियों के पोरों से बह निकले।







तब नन्ही लिओन्टीन ने मेरिअन एन्डरसन को सुना
जो फिलैडैल्फिया की ओपरा गायिका थी।
जब लिओन्टीन ने अपना पहला एकल गीत गाया
मेरिअन एन्डरसन युरोप में ओपरा गायन का अध्ययन कर रही थीं।

मेरिअन मंच पर सैटिन के वस्त्रों की फरफराहट के साथ पहुँचीं।

उनका गीत एक मशाल-सा था जिसने लिओन्टीन के दिल में एक चिन्गारी सुलगा दी।



1939 के उस ईस्टर इतवार को मेरिअन ने लिंकन मेमोरियल पर गाया, क्योंकि केवल गोरों के लिए एक सभा भवन ने उन्हें अपने यहाँ गाने देने से इन्कार कर दिया था।

लिओन्टीन तब अपने गिरजे की गायक मंडली में ईश स्तुति गा रही थीं।

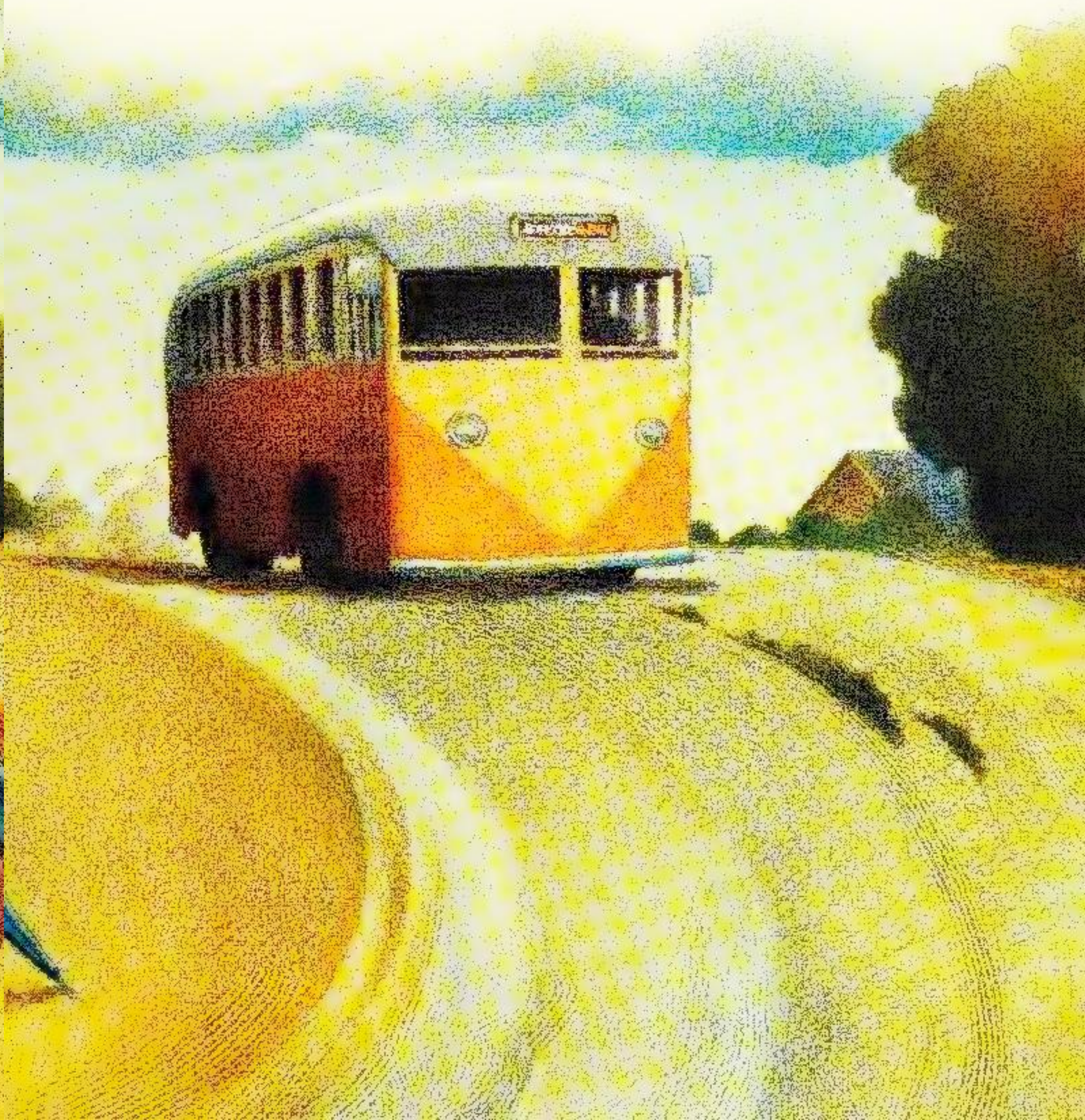
लिओन्टीन के अंतस में भविष्य का एक वादा उभरा, जैसे युवा मेरिअन के अंतस में उठा होगा।

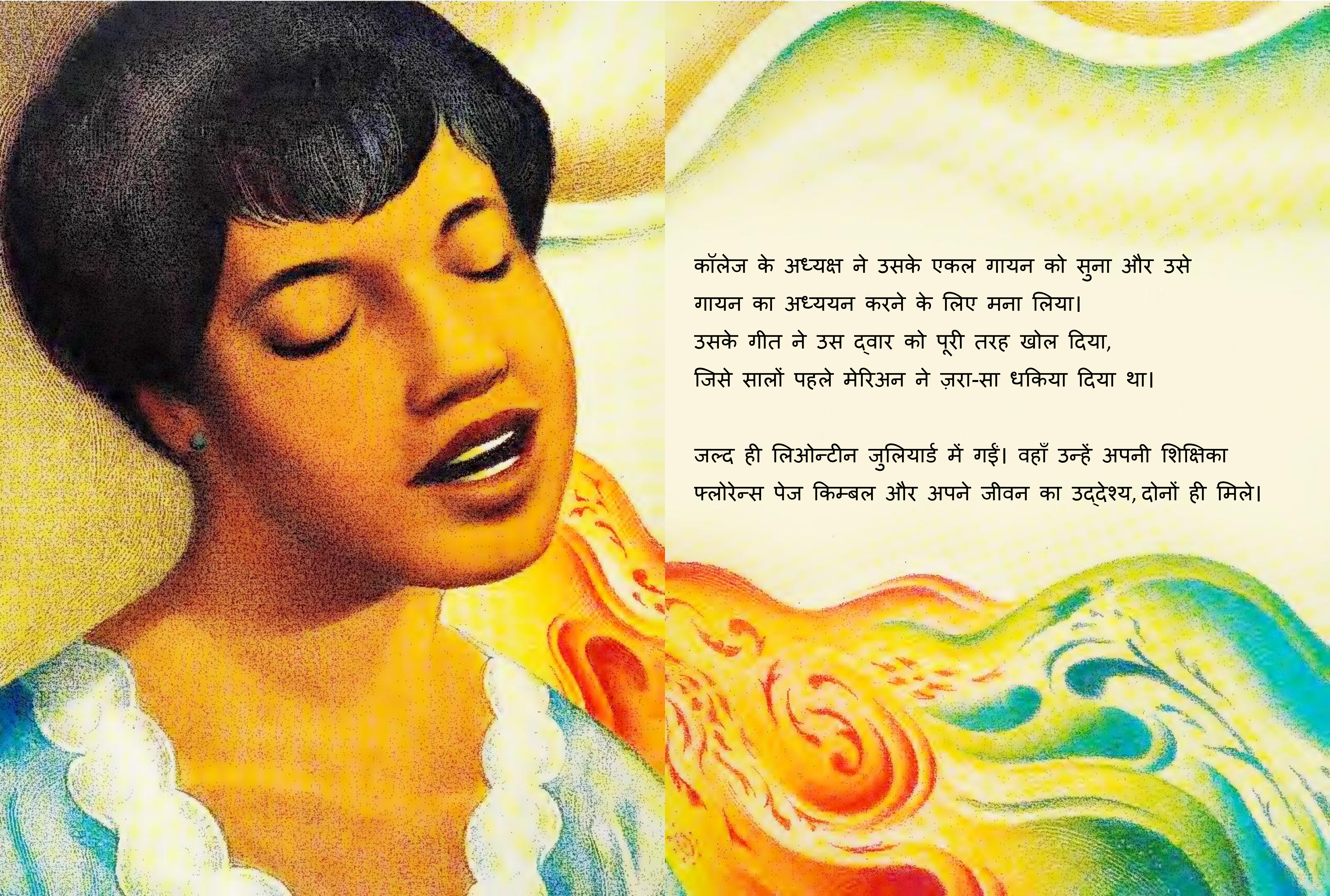




अपने सूटकेस के साथ लिओन्टीन ओहायो के अपने कॉलेज के लिए बस पर सवार हुई।

क्योंकि एक काली युवती के लिए पेशेवर ओपरा गायिका बनना असंभव था, वह एक शिक्षिका बनने का लक्ष्य ले निकली थी।





कॉलेज के अध्यक्ष ने उसके एकल गायन को सुना और उसे गायन का अध्ययन करने के लिए मना लिया।
उसके गीत ने उस द्वार को पूरी तरह खोल दिया,
जिसे सालों पहले मेरिअन ने ज़रा-सा धकिया दिया था।

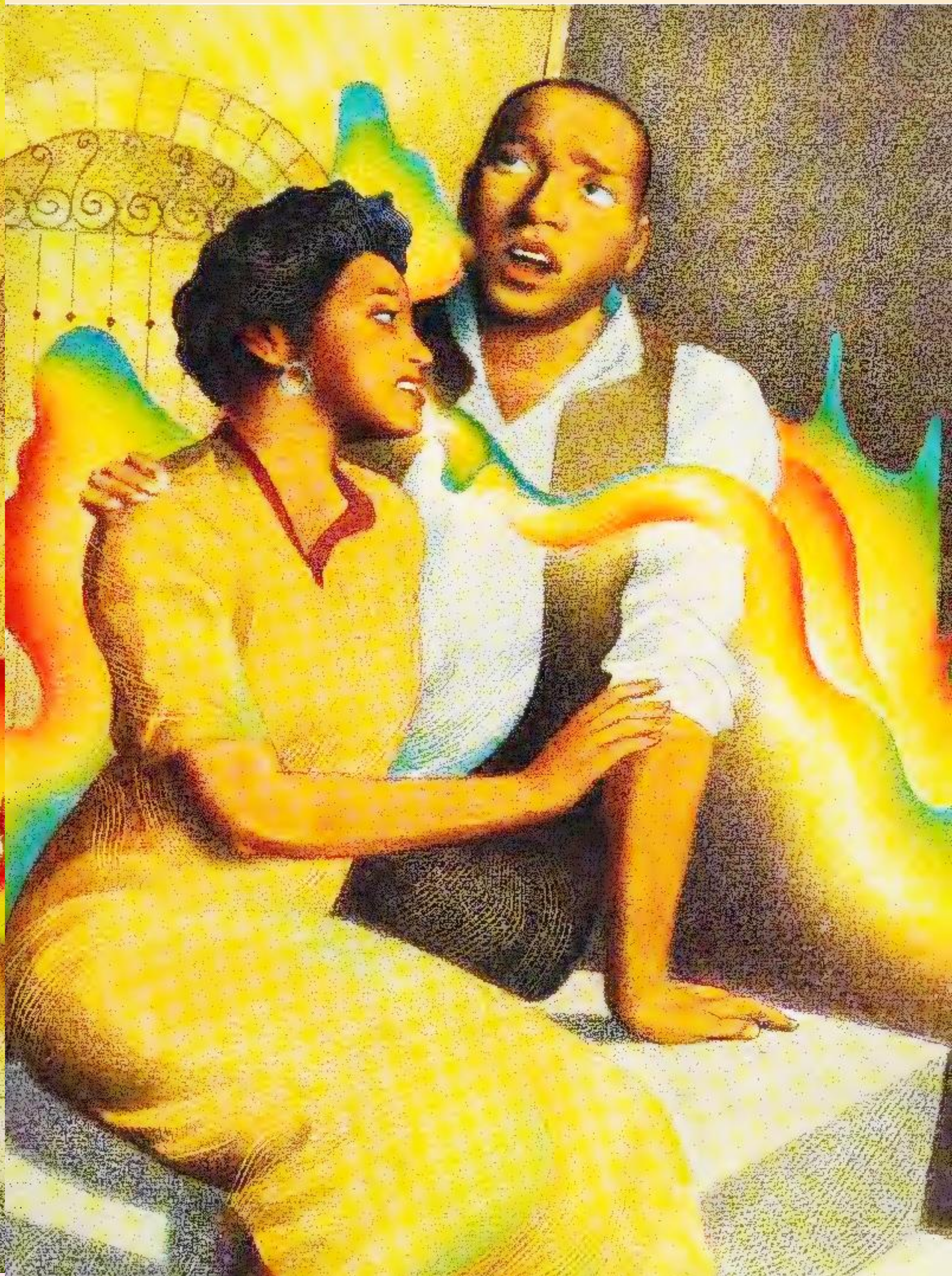
जल्द ही लिओन्टीन जुलियार्ड में गईं। वहाँ उन्हें अपनी शिक्षिका फ्लोरेन्स पेज किम्बल और अपने जीवन का उद्देश्य, दोनों ही मिले।



पर ग्रैंड ओपेरा के दरवाज़े खुलने का समय अभी नहीं आया था।

लिओन्टीन को पहले ब्रॉडवे में पोर्गी एण्ड बैस के पुनर्मंचन में मौका मिला।

उसके लिए की गई विश्व यात्रा के दौरान लिओन्टीन का गायन शहतीर तक उठा।

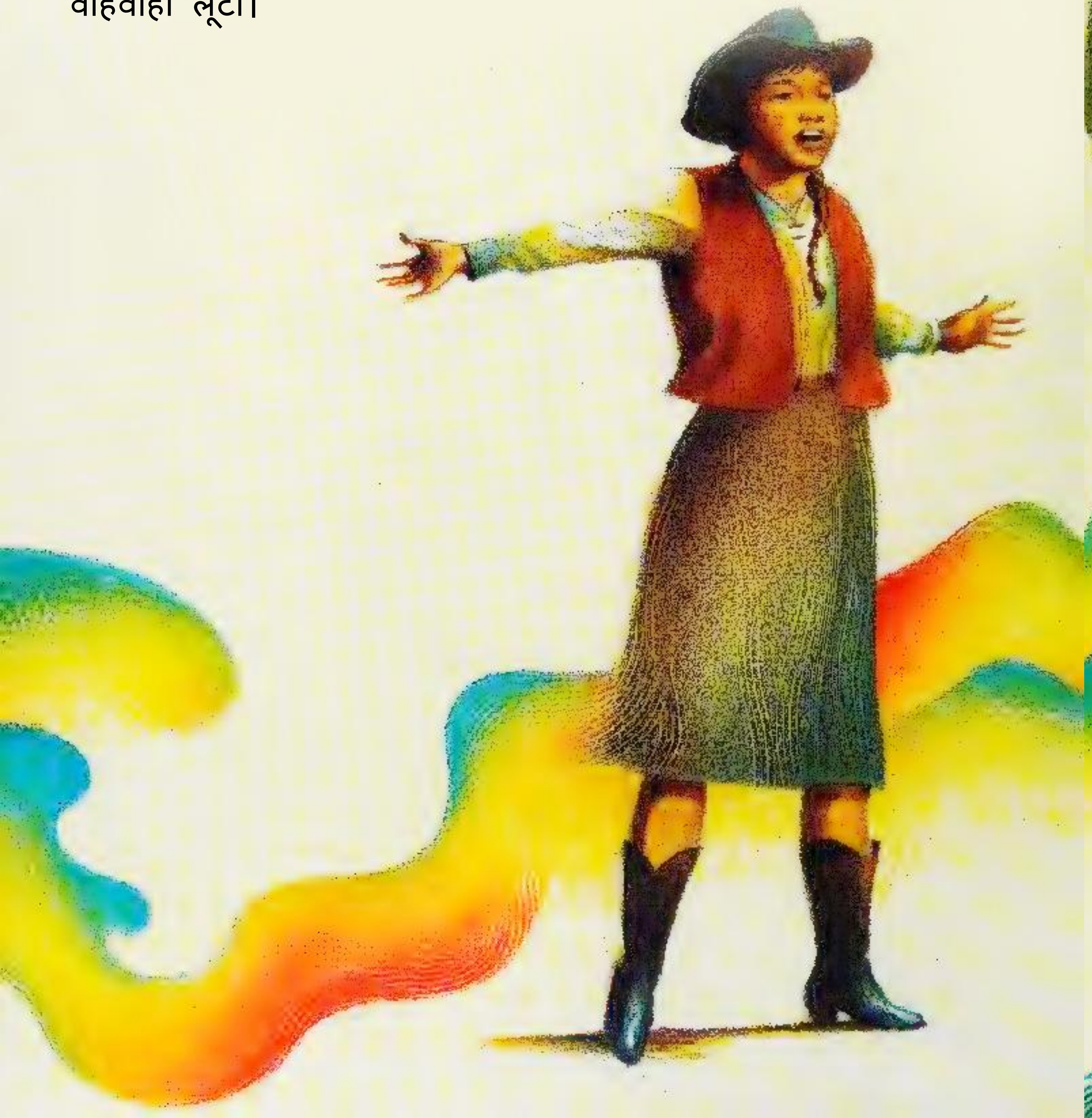


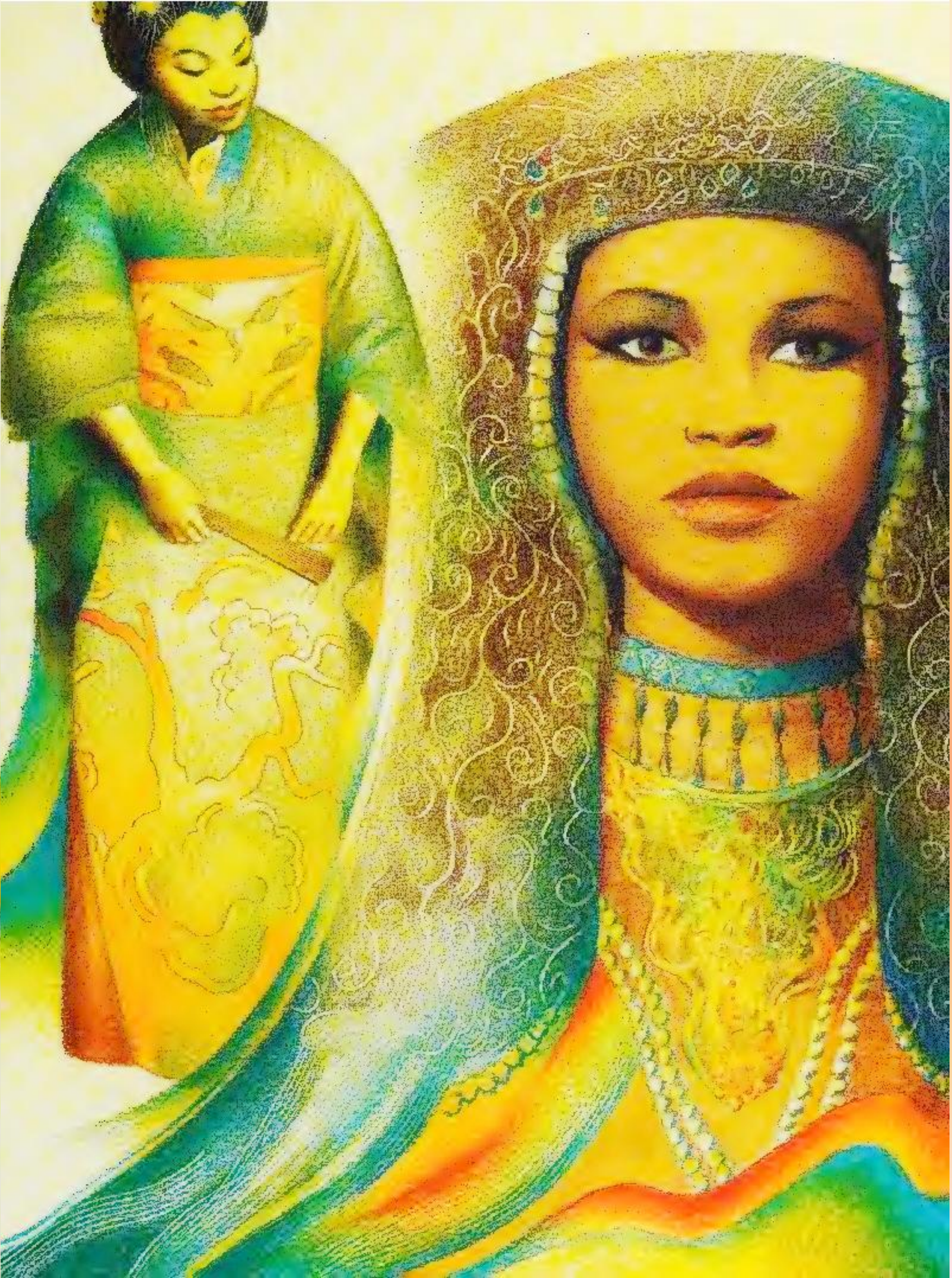
जब लिओन्टीन के गायन का पर्दा उठा

उन्होंने पश्चिमी सीमा के एक सलून की मालकिन मिनी के रूप में,

मदाम बटरफ्लाय में चो-चो सान के रूप में,

और नाइल की रानी क्लिओपाट्रा के रूप में दर्शकों की वाहवाही लूटी।

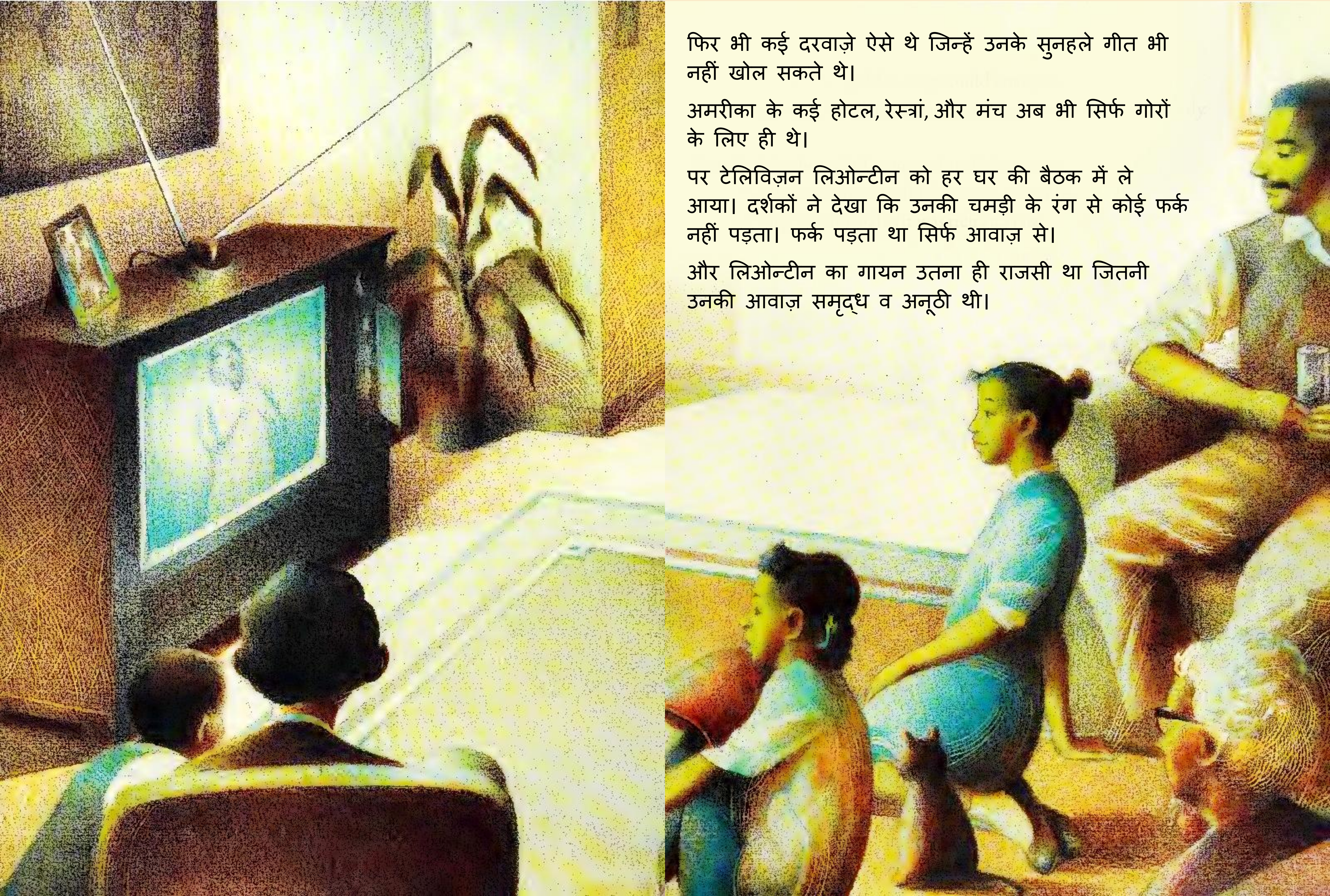






वे पहली काली गायिका थीं जिन्होंने इटली के मशहूर ओपरा सभागार ला स्काला में गायन किया।

उनका गायन, सभागार के छह तल्लों की बाल्कनियों छूता हुआ उसकी सुनहरी छत तक उठा।



फिर भी कई दरवाज़े ऐसे थे जिन्हें उनके सुनहले गीत भी नहीं खोल सकते थे।

अमरीका के कई होटल, रेस्त्रां, और मंच अब भी सिर्फ गोरों के लिए ही थे।

पर टेलिविज़न लिओन्टीन को हर घर की बैठक में ले आया। दर्शकों ने देखा कि उनकी चमड़ी के रंग से कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता था सिर्फ आवाज़ से।

और लिओन्टीन का गायन उतना ही राजसी था जितनी उनकी आवाज़ समृद्ध व अनूठी थी।



लिओन्टीन आइडा में जितनी शाही लगीं उतनी पहले कभी नहीं लगीं थीं।

लगा मानों वे इस भूमिका में गाने के लिए ही पैदा हुई थीं।

इथियोपिया की राजकुमारी के रूप में, उनकी चमड़ी का रंग, उनकी पोशाक, उनका समूचा व्यक्तित्व ही विलक्षण था।

मेरिअन के कंधों पर खड़ी लिओन्टीन ने दर्शकों की भीड़ को चमत्कृत कर डाला।

उनकी आत्मा की आवाज़ मानो उनके पूर्वजों की साँसों की मदद से ऊपर उठ रही थी।



जब लिओन्टीन ने 1955 में मेट्रोपोलिटन हाउस में गाया, उन्होंने मेरिअन द्वारा छह साल पहले ज़रा-सा खोले गए दरवाज़े को पूरी तरह खोल दिया।

लिओन्टीन को पहली मुख्य भूमिका ओपरा नाटक इल ट्रोवेटोरे में मिली। इस दुखद प्रेम-कथा में वे एक कुलीन महिला की भूमिका में थीं।

प्रदर्शन के बाद दर्शकों ने पूरे बयालीस मिनटों तक खड़े होकर तालियाँ बजाईं।

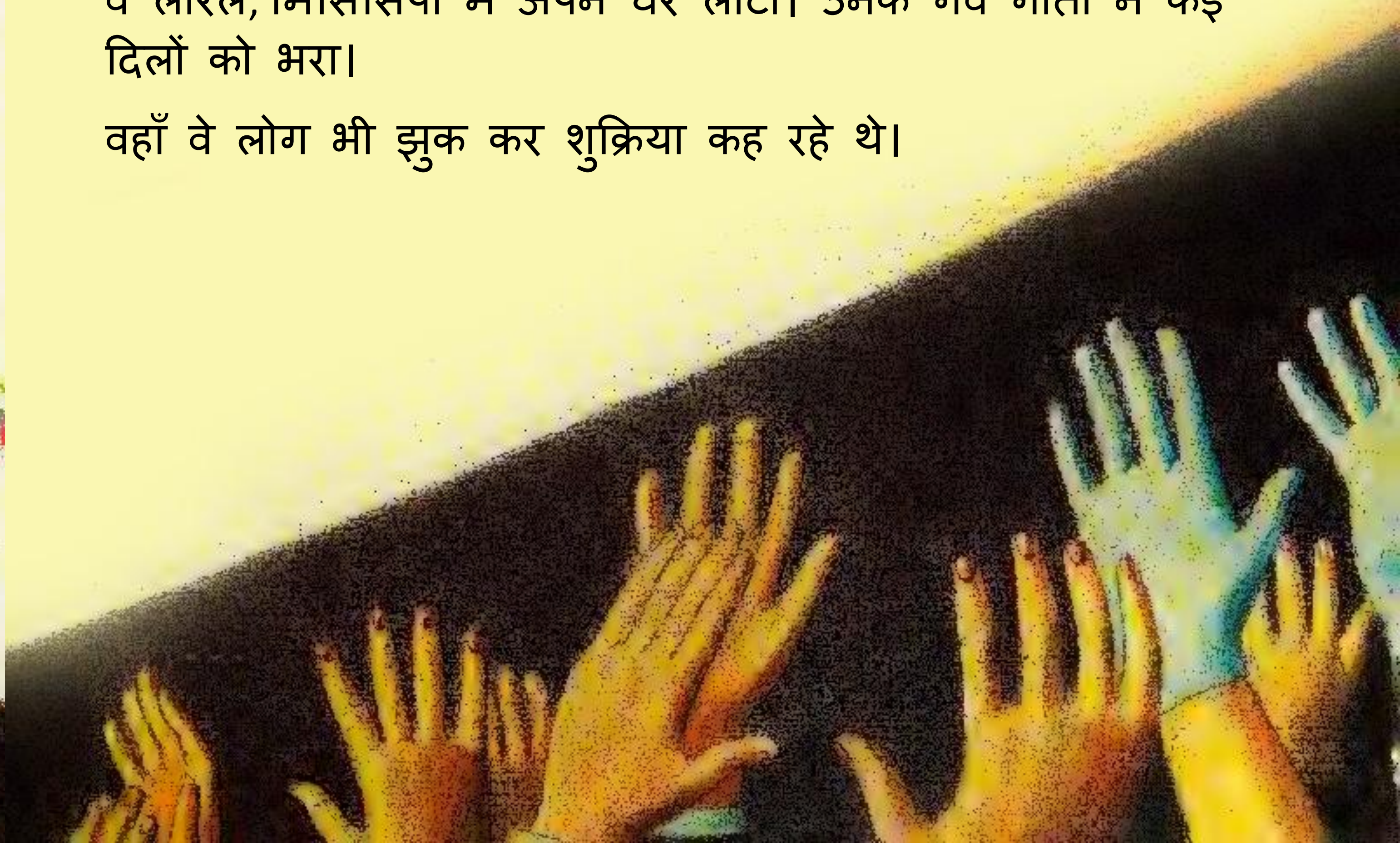
पैरों के नीच दर्शकों द्वारा फेंके गए गुलाबों और आँखों में आँसुओं के साथ लिओन्टीन नीचे झुकीं

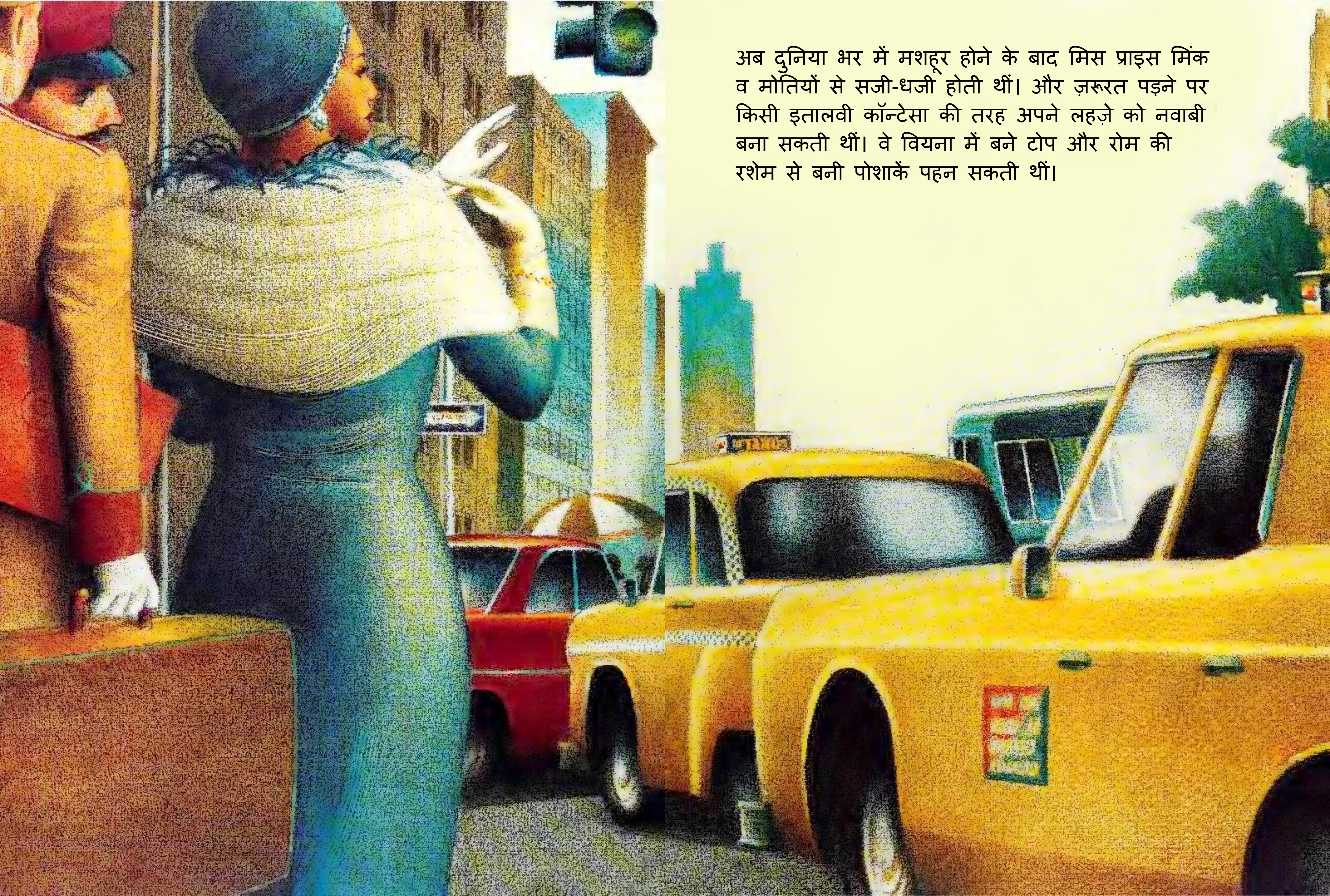
उन्होंने पाया कि स्पॉट-लाइट कई जगहों पर छाया डाल रहीं थीं, और

उन्हें समझ आया कि वे परछाइयाँ केवल उनकी नहीं बल्की उनके मात-पिता, शिक्षकों और मेरिअन की भी हैं।

वे लॉरेल, मिसिसिपी में अपने घर लौटीं। उनके गर्व गीतों ने कई दिलों को भरा।

वहाँ वे लोग भी झुक कर शुक्रिया कह रहे थे।





अब दुनिया भर में मशहूर होने के बाद मिस प्राइस मिंक व मोतियों से सजी-धजी होती थीं। और ज़रूरत पड़ने पर किसी इतालवी कॉन्टेसा की तरह अपने लहज़े को नवाबी बना सकती थीं। वे वियना में बने टोप और रोम की रशेम से बनी पोशाकें पहन सकती थीं।



पर मंच के पीछे वे बस लिओन्टीना थीं, जो रात भर ट्विस्ट नाच सकती थीं। उनका गीत कतई विषाद गीत (ब्लूस) नहीं था।

लेखिका की कलम से

लॉरेल, मिसिसिपी में 1927 में पैदा हुई वायलेट लिओन्टीन प्राइस को मेरिअन एन्डरसन की विरासत मिली। मेरिअन पहली काली ओपरा गायिका थीं जिन्हें मैट्रोपोलिटन ओपरा हाउस में गाने का मौका मिला था। एन्डरसन ने वॉशिंगटन डी.सी. स्थित लिंकन मेमोरियल पर अपनी ऐतिहासिक संगीत सभा की थी, क्योंकि एक सभागार ने उन्हें यह कहा था कि उनका सभागार केवल गोरों के लिए है। प्राइस भी अपनी तरह की अग्रदूत रहीं, क्योंकि वे संयुक्त राज्य अमरीका की पहली काली गायिका थीं, जिनके गायन को टी.वी. पर प्रसारित किया गया। उन्होंने इटली के मशहूर ओपरा हाउस ला स्काला में मुख्य भूमिकाएं निभाईं।

एक आरा कारखाने के मज़दूर व एक दाई की बेटी, लिओन्टीन गिरजे की गायन मंडली में गाया करती थीं। उनकी प्रतिभा कम उम्र में ही नज़र आने लगी थी। उनकी माँ का कहना था कि "खुदा ने उसे उसकी आवाज़ अता की है।" मेरिअन एन्डरसन को गाते देख किशोर लिओन्टीन अपना भविष्य भी मंच में देखने लगीं। पर नस्लवाद के चलते एक काली लड़की के लिए पेशेवर ओपरा गायिका बनना लगभग असंभव ही था।

सो प्राइस ने ओहायो के विल्बरफोर्स कॉलेज में संगीत शिक्षा को मुख्य विषय (मेजर) बनाने का फैसला किया, ताकि वे शिक्षिका बनें और अपने भाई की शिक्षा का भार उठा सकें। पर उनकी आवाज़ उन्हें दूसरी ही दिशा में ले गई।

उन्होंने अपने मेजर का विषय बदल कर गायन किया। उन्हें जुलियार्ड की संगीत शाला में दाखिला मिला। ट्रेडोन्ट ओपरा देखने के बाद उन्होंने ओपरा गायन को अपना पेशा बनाना तय किया।

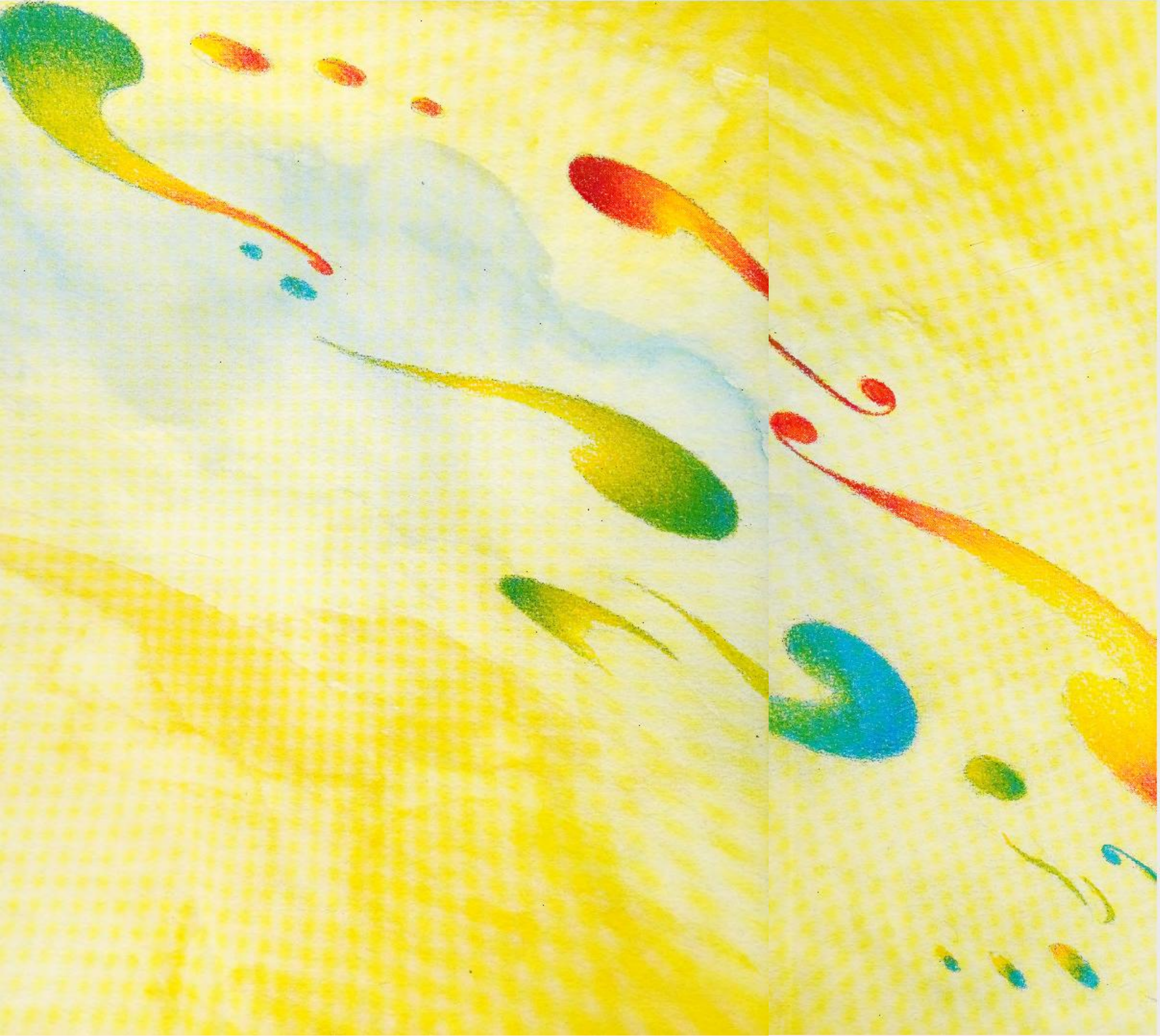
ब्रॉडवे में *पोर्गी एण्ड बैस* को फिर से मंचित किया जा रहा था। उसका एक किरदार निभाने वाली गायिका बीमार हो गई। प्राइस को उसकी भूमिका को गाने का अवसर मिला और वे मशहूर हो गईं। पुचिनी, मोत्जार्ट, तथा वेर्दी के ओपरा में वे विलक्षण रहीं। वेर्दी की 'आइडा' - जो इथियोपिया की एक राजकुमारी का किरदार था - की भूमिका ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाई।

इतनी मशहूर होने के बाद भी वे उन्हें अपने देश अमरीका में नस्लवाद का सामना करना पड़ा। पर उनकी अद्‌भुत आवाज़ ने उन्हें इस बाधा को लांघने में मदद की। दर्जन भर से अधिक ग्रैमी पुरस्कार पाने और आइडा के अंतिम प्रदर्शन के बाद लिओन्टीन ने 1985 में सेवा-निवृत्ति ली। इसके बावजूद वे मंच पर कई वर्षों तक गाती रहीं।

राष्ट्रपति लिन्डन बी. जॉनसन ने प्राइस की कलाकारी तब प्रशंसा की, जब लिओन्टीन को *प्रैशिडैंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम* से नवाज़ा गया। "सशक्त व अद्‌भुत, और बिरले ही पाए जाने वाली आवाज़" उन्होंने कहा। "उनके गायन ने देश भर को प्रसन्न किया है।"

जिस पथ पर एन्डरसन ने साहसिक कदम रख उसे प्रशस्त किया था, उसी पथ पर अनेक अमरीकी दीवाओं ने (महान गायिकाओं) भी कदम बढ़ाए, जैसी नॉर्मन, ग्रेस बमबरी, कैथलीन बैटल, तथा डैनी ग्रेव्स।





कैरल बॉस्टन वेदरफोर्ड की सचित्र पुस्तकों को अनेक साहित्यिक पुरस्कार मिलें हैं। जिनमें कैल्डेकॉट ऑनर, करैटा स्कॉट किंग पुरस्कार, एनएएसीपी छवि पुरस्कार शामिल हैं। उन्हें उत्तरी कैरोलाइन के साहित्य पुरस्कार से भी नवाज़ा गया है।

कैरल नॉर्थ कैरोलाइना में रहती हैं और फेयरविल राज्य विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं।

राऊल कोलोन ने कई पुरस्कृत पुस्तकों को चित्र दिए हैं। जिनमें रिचर्ड माइकलसन की *एज़ गुड एज़ ऐनीबडी* , पैट मोरा की *डोना फ्लोर* तथा *टोमास एण्ड द लाइब्रेरी लेडी* शामिल हैं। उनके काम को पूरा मैलप्रे पुरस्कार, सोसायटी ऑफ इलस्ट्रेटर्स का स्वर्ण व रजत पदक व दो टोमास रिवेरा मैक्सिकन अमेरिकन बाल पुस्तक पुरस्कार भी मिले हैं। राऊल अपनी पत्नी के साथ न्यू यॉर्क में रहते हैं।

